अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

प्रकाशम् जिले में तेरापंथ के महासूर्य बांट रहे ज्ञान का प्रकाश

-मार्टूर से लगभग आठ कि.मी. विहार कर आचार्यश्री पहुंचे कोनानकी

-आचार्यश्री ने जीवन में बताया भाषा का महत्त्व, अनावश्यक न बोलने को बताया सबसे बड़ा मौन

06.06.2018 कोनानकी, प्रकाशम् (आंध्रप्रदेश): अहिंसा यात्रा प्रणेता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें देदीप्यमान महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना संग अपनी दक्षिण यात्रा के दौरान आंध्रप्रदेश में अपनी ज्ञान रश्मियों से सामाजिक बुराइयों रूपी अंधेरे को दूर कर रहे हैं। इसी क्रम में आचार्यश्री अपनी धवल सेना संग आंध्रप्रदेश के गुन्टूर जिले की सीमा को अतिक्रांत कर प्रकाशम् जिले में पावन प्रवेश कर चुके हैं। तेरापंथ के महासूर्य का प्रकाशम् जिले में प्रवेश होने के साथ ही ऐसा लग रहा है मानों प्रकाशम् जिले को ज्ञान से प्रकाशित करने के लिए ऐसे तेजस्वी महासंत का शुभागमन हुआ है। आचार्यश्री की चरणधूलि को प्राप्त कर प्रकाशम् जिला भी जगमगा उठा है।

बुधवार को आचार्यश्री प्रातः की मंगल बेला में मार्टूर स्थित जिला परिषद हाइस्कूल से मंगल प्रस्थान किया तो आज आसमान से सूर्य नदारद था, किन्तु हवा के नहीं चलने से उमस बरकरार थी। हालांकि सूर्य की तीखी किरणों से लोगों का बचाव हो रहा था। आचार्यश्री लगभग आठ किलोमीटर का विहार कर प्रकाशम् जिले के कोनानकी गांव स्थित जिला परिषद हाइस्कूल में पधारे।

आचार्यश्री के विद्यालय में पदार्पण के पश्चात् हल्की बूंदाबांदी भी हुई, किन्तु हवा के अभाव में वह उमस को दूर करने में नाकाफी सिद्ध हुई। विद्यालय परिसर में आयोजित प्रातः के मुख्य मंगल प्रवचन के दौरान आचार्यश्री ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि मानव जीवन में वाणी के रूप में एक शक्ति प्राप्त है। अनंत-अनंत जीवों को यह शक्ति प्राप्त नहीं होती। आदमी को भाषा का समुचित उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए। ने भाषा के तीन प्रकार मितभाषिता, मिष्ठभाषिता और यथार्थभाषिता का वर्णन करते हुए कहा कि आदमी को बोलने की समक्षता प्राप्त तो है, किन्तु आदमी को बोलने में विवेक रखने का प्रयास करना चाहिए। आदमी आवश्यकता से अधिक न बोले, अनावश्यक न बोले तो वह मितभाषी बन सकता है। आदमी को मौन भी करने का प्रयास करना चाहिए। मौन भी एक प्रकार की साधना है। यदि आदमी से मौन न हो सके तो उसे अनावश्यक नहीं बोलने का प्रयास करना चाहिए। अनावश्यक न बोलना भी अपने आपमें सबसे बड़ा मौन है।

आदमी जब भी बोले तो उसे मीठा बोलने का प्रयास करना चाहिए। इसके साथ ही आदमी को जो भी बोले यथार्थ अर्थात् सत्य बोलने का प्रयास करे। आदमी को झूठ न बोलने का प्रयास करना चाहिए। जहां तक संभव हो सके आदमी को सच्चाई के रास्ते पर चलने का प्रयास करना चाहिए। सच्चाई का मार्ग सीधा व सपाट होता है। सच्चाई के सामने परेशानियों तो आ सकती हैं, किन्तु वह परास्त नहीं हो सकता। जीत सच्चाई की ही होती है। आचार्यश्री ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि बोलना हमारे जीवन का अंग है और आदमी को बोलने में दम होना चाहिए और उसे ढंग से बोलने का प्रयास करना चाहिए।

मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्यश्री ने उपस्थित ग्रामीणों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्रदान कर लोगों को अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प भी स्वीकार करवाए। ग्रामीणों ने संकल्प स्वीकार कर आचार्यश्री से पावन आशीष भी प्राप्त किया।

****